International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2025; 2(4): 60-66
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 31-07-2025
Accepted: 09-08-2025
Publish : 11-08-2025

योगेश चन्द्र पाण्डेय
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग,
एम. बी. राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हल्द्वानी, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल
(उत्तराखण्ड)

डॉ. कैलाश चन्द्र
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय हल्द्वानी (शहर),
गौलापार,हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

Correspondence:
योगेश चन्द्र पाण्डेय
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग,
एम. बी. राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हल्द्वानी, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल
(उत्तराखण्ड)

दक्षिण एशिया में लोकतंत्र: उभरती चुनौतियाँ तथा संभावनाएं

योगेश चन्द्र पाण्डेय, डॉ. कैलाश चन्द्र

शोध पत्र सार

दक्षिण एशिया राजनीतिक रूप से अतिमहत्वपूर्ण क्षेत्र है। 21वीं सदी में इस क्षेत्र का राजनीतिक महत्व और वृहत हो गया है। वैश्विक व्यवस्था में बहु-ध्रुवीय राजनीति में भारत जहां एक मजबूत शक्ति के रूप में उभर रहा है, वहीं चीन अपनी महत्वाकांक्षाओं को नयी उड़ान देने का प्रयास कर रहा है। इन परिस्थितियों में भारत राजनीतिक रूप से इस क्षेत्र में लोकतंत्र का ध्वजवाहक बन कर उभरा है। भारत में लोकतंत्र दक्षिण एशिया में स्थिर राजनीति के आधार स्तम्भ रहा है तथा चीन की विस्तारवादी तथा वर्चस्ववादी नीति के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। परंतु हाल के वर्षों में लोकतंत्र पर अध्ययन करने वाली संस्थाओं जैसे कि फ्रीडम हाउस ने भारत को पूर्ण स्वतंत्र से हटाकर आंशिक रूप से स्वतंत्र की श्रेणी में रखा है। विश्व में लोकतंत्र का अध्ययन करने वाली संस्थाओं ने भी दक्षिण एशिया में लोकतंत्र के संबंध में चेताने की चेष्टा की है। वहीं कुछ अन्य घटनाक्रमों पर दृष्टिपात करने से जो चित्र उभरता है वह दक्षिण एशिया में लोकतंत्र के समक्ष उभर रही गंभीर चुनौतियाँ की ओर ध्यान आकृष्ट करता है। बांग्लादेश में 2024 का घटनाक्रम हो अथवा श्रीलंका की 2022 की आपात स्थिति, इन घटनाओं ने दक्षिण एशिया राजनीतिक व आर्थिक स्थिति के प्रश्नों को गंभीर बनाया है। यह शोधपत्र दक्षिण एशिया में उभर रही इन चुनौतियों का सारगर्भित अध्ययन प्रस्तुत करता है। दक्षिण एशिया में लोकतंत्र के समक्ष आज अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा बांग्लादेश जैसी बड़ी चुनौतियाँ हैं, साथ ही भारत जैसे राष्ट्र की अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में लोकतान्त्रिक छवि पर प्रश्न उठ रहे हैं। इन परिस्थितियों में दक्षिण असियाई राष्ट्रों के मध्य वृहद सहयोग की स्थिति के अभाव पर भी यह शोध पत्र प्रकाश डालता है। शोध पत्र दक्षिण एशिया के समान अन्य क्षेत्रीय सहयोग के मुख्य संगठनों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। क्षेत्रीय राजनीतिक सहयोग संवर्धन के लिए किए गए प्रयासों का मूल्यांकन करते हुए यह शोध पत्र भविष्य की संभावनाओं की पहचान करता है तथा समाधान प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: दक्षिण एशिया, लोकतंत्र, क्षेत्रीय सहयोग, सार्क।

प्रस्तावना: आधुनिक काल में लोकतंत्र, शासन व्यवस्थाओं में सर्वाधिक स्वीकार्य शासन व्यवस्था है। सभी राष्ट्र स्वयं को लोकतांत्रिक सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं। यहाँ सर्वप्रथम यह समझना महत्वपूर्ण है कि लोकतंत्र से हमारा तात्पर्य क्या है? लोकतंत्र शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया गया है। जो मात्र चुनाव अथवा सरकार के गठन को संदर्भित नहीं करता अपितु सरकार अथवा शासन की ऐसी एक प्रणाली का द्योतक है, जिसमें अधिकारी लोकप्रिय रूप से चुने गए प्रतिनिधियों के प्रति उत्तरदायी होते हैं और स्वतंत्र रूप से अधिनियमित संविधान के तहत काम करते हैं। जो शासन व्यवस्था नागरिकों के मूल अधिकारों को सुनिश्चित करने के साथ उनका संरक्षण करती है। ऐसी शासन प्रणाली जिसमें, पहुँच के मार्ग खुले होते हैं और प्रेस, राजनीतिक दल, दबाव समूहों, हित समूह और अन्य ऐसी संस्थाएँ बोलने और निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होती हैं। लोकतंत्र को विद्वानों ने विभिन्न संज्ञाओ में अभिकथित

करने का यत्न किया है, जुआन लिंज़ और अल्फ्रेड स्टेपन के शब्दों में, "समेकित लोकतंत्र तब तक स्थापित नहीं होता जब तक कि लोकतंत्र के सिद्धांत और उससे जुड़ी संस्थाएँ इस हद तक संस्थागत नहीं हो जातीं कि लोग इसे "शहर में एकमात्र खेल" मानने लगें"[1]। दूसरे शब्दों में, लोकतांत्रिक समेकन एक बहुआयामी घटना है जिसमें राजनीतिक संस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों दोनों का परिवर्तन शामिल है।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि अध्येता के इस शोध का सैद्धांतिक आधार यह है कि अध्येता लोकतंत्र को सरकार के एकमात्र वैध रूप के रूप में स्वीकार करता है। तथा इस विचार का पोशक है कि नागरिकों को नई प्रणाली की संरचना को स्वीकार करना चाहिए, नवनिर्मित लोकतांत्रिक संस्थाओं की प्रथाओं का समर्थन करना चाहिए और पुरानी सत्तावादी प्रणाली और उसकी प्रथाओं को अस्वीकार करना चाहिए। इस तरह के समर्थन के उभरने से पहले, लोगों को मनोवृत्ति समायोजन की एक लंबी और धीमी प्रक्रिया से गुजरना होता है, जिसके दौरान वे अधिनायकवादी समर्थक राजनीतिक संस्कृति को पीछे छोड़, लोकतंत्र समर्थक, अधिनायकवाद विरोधी विश्वासों और मूल्यों को अपनाते हैं। अध्येता लोकतंत्र की सफलता के लिए इसे एक अनिवार्य शर्त मानता है।

दक्षिण एशिया वैश्विक राजनीति में महत्वपूर्ण क्षेत्र है। 21वीं सदी में इस क्षेत्र का महत्व व्यापक रूप से उभरा है। भौगोलिक दृष्टि से यदि *देखा जाए तो* यह क्षेत्र उत्तर में पर्वत श्रृंखलाओं तथा दक्षिण और पश्चिम में समुद्र से घिरा हुआ है। उत्तर-पश्चिम में हिंदू कुश, मध्य उत्तर में काराकोरम रेंज और उत्तर-पूर्व में हिमालय, पूर्व में दक्षिण-पूर्व में बंगाल की खड़ी,दक्षिण में हिन्द महासागर, पश्चिम में अरब सागर के मध्य अवस्थित है। भारत, पाकिस्तान, श्री लंका और बांग्लादेश को दक्षिण एशिया के देश या भारतीय उपमहाद्वीप के देश कहलाते हैं, जिसमें नेपाल और भूटान को भी शामिल कर लिया जाता है। अफगानिस्तान और मालदीव को भी इस भूभाग में सम्मिलित किया जाता है। दक्षिण एशिया में आठ देश अवस्थित हैं।

दक्षिण एशिया के आधुनिक राजनीतिक परिदृश्य को 1947 में ब्रिटिश शासन के अंत के बाद विउपनिवेशीकरण प्रक्रिया ने आकार दिया। भारत और पाकिस्तान विभाजन के परिणाम स्वरूप दो राष्ट्र राज्य अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में उभरे, भारत ने 1950 में एक संघीय लोकतांत्रिक संविधान अपनाया और पाकिस्तान सैन्य और नागरिक शासन के बीच झूलता रहा है। बांग्लादेश 1971 में पाकिस्तान के साथ एक क्रूर युद्ध के बाद एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा और तब से राजनीतिक अस्थिरता और सत्तावादी प्रवृत्तियों से जूझ रहा है। श्रीलंका ने 1948 में स्वतंत्रता प्राप्त की और प्रारंभ में लोकतांत्रिक शासन को स्थापित करने की चेष्टा की, हालाँकि इसकी स्वतंत्रता के बाद की राजनीति जातीय तनाव और नागरिक संघर्ष से गहराई से प्रभावित थी। नेपाल 2008 में एक निरंकुश राजशाही से एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य में परिवर्तित हुआ, जबकि भूटान धीरे-धीरे शाही मार्गदर्शन के तहत लोकतंत्र की ओर बढ़ा। मालदीव, हालांकि ऐतिहासिक रूप से निरंकुश है, परंतु 2008 से बहुदलीय लोकतंत्र के साथ प्रयोग किया है। और अफगानिस्तान जिसे साम्राज्यों की कब्रगाह के रूप में देखा जाता है लोकतंत्र के प्रारम्भिक प्रयासों की आसफलता बाद इस समय तालिबान के सत्तावदी शासन के अधीन है।

साहित्यिक पुनरावलोकन: विषय विशेषज्ञों द्वारा समय समय पर क्षेत्रीय राजनीति तथा पर लोकतंत्र पर वृहत दृष्टि डालने कि चेस्टा की है। इस क्रम में क्रेग बैक्सटर का लेख 'डिमाक्रसी एण्ड अथॉरटेरीअनिज़्म इन साउथ एशिया',(1984) विशेष रूप से भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में लोकतांत्रिक और सर्वाधिकारवादी शासन व्यवस्थाओं की गतिशीलता का विश्लेषण करता है। यह लेख इन देशों के स्वतंत्रता के बाद के अनुभवों, औपनिवेशिक विरासत, और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों के आधार पर लोकतंत्र और सर्वाधिकारवाद के बीच तनाव का अध्ययन करता है। लेख में धार्मिक परंपराओं, विशेष रूप से इस्लाम और हिंदू धर्म, को लोकतंत्र के लिए चुनौती के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, शिक्षा का स्तर, और वैश्विक भू-राजनीतिक प्रभाव जैसे कारक भी लोकतंत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिनका लेख में पर्याप्त विश्लेषण नहीं है। कैथरीन एडनी और एंड्रयू वायट का लेख ; डेमॉक्रसि इन साउथ एशिया: गेटिंग बियोंड द स्ट्रक्चर-एजेन्सीस डाइकॉटमी,(2004) दक्षिण एशिया में लोकतांत्रिक विकास की जटिलताओं का विश्लेषण करता है, यह लेख पारंपरिक संरचनावादी और संक्रमण सिद्धांतों की सीमाओं को चुनौती देता है, जो लोकतंत्र के विकास में संरचना और एजेंसी के बीच एक द्वेत भाव निर्मित करते हैं। लेखकों का तर्क है कि

संरचना और एजेंसी का अंतर्संबंध, विशेष रूप से महत्वपूर्ण परिवर्तन के क्षणों (क्रिटिकल जंक्शन्स) में, लोकतांत्रिक परिणामों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। लेख भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका के बीच लोकतांत्रिक परिणामों की भिन्नता को समझाने के लिए राजनीतिक दलों और जातीय विविधता की भूमिका पर जोर देता है। हालांकि, इसकी कुछ सीमाएँ, जैसे कि सामाजिक-आर्थिक कारकों पर कम ध्यान और समयबद्ध डेटा, इसके दायरे को सीमित करती हैं। गोवहेर रिजवी अपने लेख 'डिमाक्रसी, गवर्नन्स एण्ड सिवल सोसाइटी इन साउथ एशिया'(1994) में दक्षिण एशिया में लोकतंत्र की सफलता और विफलता को राजनीतिक दलों की कमजोरी, सैन्य और नौकरशाही के हस्तक्षेप, और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं जैसे कारकों के आलोक में समझने का तर्क प्रस्तुत करते हैं। लेख भारत और श्रीलंका में लोकतांत्रिक लचीलापन और पाकिस्तान और बांग्लादेश में इसकी नाजुकता को रेखांकित करता है, जो राजनीतिक दलों की कमजोरी, सैन्य हस्तक्षेप, और नागरिक समाज की भूमिका पर जोर देता है। संत बहादुर थापा का शोध पत्र 'द बांग्लादेश क्राइसिस: ए वैक-अप कॉल फॉर साउथ *एशिया' (2025),* दक्षिण एशिया में लोकतांत्रिक अस्थिरता और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों के बीच जटिल संबंधों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह लोकतांत्रिक मानकों के क्षरण, सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, और बाहरी हस्तक्षेप को बांग्लादेश के संकट के प्रमुख चालकों के रूप में पहचानता है। लेख क्षेत्रीय स्थिरता के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो लोकतांत्रिक सुधारों, समावेशी शासन, और क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता पर बल देता है। मो. नज़रुल इस्लाम कि पुस्तक 'इस्लाम एण्ड डिमाक्रसी इन साउथ एशिया' (2020), इस्लाम और लोकतंत्र के बीच संबंधों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रदान करती है, विशेष रूप से बांग्लादेश जैसे क्षेत्र में जहां धर्म और राजनीति गहराई से परस्पर जुड़े हुए हैं। यह पुस्तक निष्कर्ष निकालती है कि बांग्लादेश जैसे बहुसंख्यक मुस्लिम राज्य में अतिवादी धर्मनिरपेक्षता या हिंसक धर्मनिरपेक्षता और लोकतांत्रिक इस्लामवाद का दमन प्रतिकूल परिणाम दे सकता है। यह सुझाव देती है कि मध्यस्थता और समावेशिता लोकतंत्र और इस्लाम के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। पुस्तक लोकतंत्र की स्थापना, सैन्यवाद और आतंकवाद के मूल कारणों को संबोधित करने, और इस्लामी आंदोलन की पुनर्व्याख्या करने जैसे नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करती है।

वर्तमान में दक्षिण एशिया में लोकतंत्र की स्थिति: दक्षिण एशिया में लोकतंत्र पर वर्तमान में गंभीर प्रश्न उठाए जा रहे हैं। फ्रीडम हाउस इंडेक्स, विश्व में लोकतांत्रिक गुणवत्ता का आकलन करने में व्यापक रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले सूचकांकों में से एक है। फ्रीडम हाउस इंडेक्स के अनुसार, वैश्विक प्रवृत्ति के सापेक्ष्य दक्षिण एशिया भी लोकतांत्र में गिरावट के दौर से गुजर रहा है। 2020 की फ्रीडम हाउस रिपोर्ट में, दुनिया के 25 सबसे बड़े लोकतंत्रों में भारत के स्कोर में सबसे बड़ी गिरावट को रेखांकित किया है। भारत को स्वतंत्र से आंशिक स्वतंत्र की श्रेणी में रखा दिया गया है। बांग्लादेश और पाकिस्तान ने भी इस क्षेत्र के लोकतांत्रिक पतन में योगदान दिया।

इस संस्था द्वारा 1973 से लोकतंत्र का अध्ययन कर रिपोर्ट प्रकाशित की जा रही हैं। इस संस्था को विश्व में लोकतंत्र के अध्ययन के लिए विश्वसनीय माना जाता है। हाल के वर्षों में इस संस्था ने दक्षिण एशिया के एकमात्र स्वतंत्र देश के रूप में स्थापित भारत को आंशिक रूप से स्वतंत्र की श्रेणी में रखा गया है। जो दक्षिण एशिया में लोकतंत्र के विकास में एक अवरोध के रूप में देखा जाना चाहिए। संलग्न तालिका (तालिका 1) में दक्षिण एशिया में गत 6 वर्षों में दक्षिण एशिया में हुए परिवर्तन को दर्शाया गया है।

विभिन्न मानक जिनमें उदार लोकतंत्र सूचकांक, चुनावी लोकतंत्र सूचकांक, उदार घटक सूचकांक, समतावादी घटक सूचकांक, सहभागी घटक सूचकांक, तथा विचार-विमर्श घटक सूचकांक सम्मिलित किए जाते हैं। सभी के लिए निर्धारित अंकों के आधार पर देशों को 6 वर्गों में विभाजित किया जाता है। उदार लोकतंत्र, चुनावी लोकतंत्र, स्याह (ग्रे) लोकतंत्र, स्याह (ग्रे) निरंकुशता, चुनावी निरंकुशता तथा पूर्ण निरंकुशता में विभाजित किया जाता है।

तालिका 1.

फ्रीडम हाउस रिपोर्ट 2024 के अनुसार गत 6 वर्षों (2019 से 2024) में दक्षिण एशियाई देशों के सूचकांक:

देश	2019	2020	2021	2022	2023	2024
अफगानिस्तान	27 स्व नहीं	27 स्व नहीं	27 स्व नहीं	10 स्व नहीं	8 स्व नहीं	6 स्व नहीं
बांग्लादेश	41 आं स्व	39 आं स्व	39 आं स्व	39 आं स्व	40 आं स्व	40 आं स्व
भूटान	59 आं स्व	59 आं स्व	61 आं स्व	61 आं स्व	61 आं स्व	69 आं स्व
भारत	75 स्व	71 स्व	67 आं स्व	66 आं स्व	66 आं स्व	66 आं स्व
नेपाल	54 आं स्व	56 आं स्व	56 आं स्व	57 आं स्व	58 आं स्व	62 आं स्व
पाकिस्तान	39 आं स्व	38 आं स्व	37 आं स्व	37 आं स्व	37 आं स्व	35 आं स्व
मालदीव	35 आं स्व	40 आं स्व	40 आं स्व	40 आं स्व	41 आं स्व	44 आं स्व
श्री लंका	56 आं स्व	56 आं स्व	56 आं स्व	55 आं स्व	54 आं स्व	54 आं स्व

स्रोत: फ्रीडम हाउस रिपोर्ट 2024, के आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित। https://freedomhouse.org/report/freedom-world

टिप्पण: स्व नहीं – स्वतंत्र नहीं, आं स्व – आंशिक स्वतंत्र, स्व – स्वतंत्र

अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र और चुनावी सहायता संस्थान (IDEA) द्वारा प्रकाशित 'लोकतांत्रिक भविष्य की कल्पना: दक्षिण एशिया दूरदर्शिता रिपोर्ट 2025' दक्षिण एशिया में लोकतंत्र के भविष्य के विषय में गंभीर खतरों को रेखांकित करती है, जिसमें कहा गया है, "दक्षिण एशिया में लोकतंत्र हर मामले में खराब हो गया है। चुनावी प्रक्रियाएँ और जाँच और संतुलन लंबे समय से लगातार कम होते जा रहे हैं, जबकि स्वतंत्रताओं के निरंतर क्षरण का मतलब है कि औपचारिक नागरिक समाज अतीत की बात हो गई है। मुख्यधारा का मीडिया राज्य या क्रोनी-पूंजीवादी नियंत्रण में आ गया है। निगरानी और सेंसरशिप उद्योग, जो रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, इसने आशाजनक सोशल मीडिया नेटवर्क को भी कमजोर कर दिया है"[2]।

लोकतंत्र के विभिन्न मानकों पर प्रकाशित इस रिपोर्ट का अध्ययन करने पर यही तथ्य उभरते हैं की दक्षिण एशिया लोकतंत्र की गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है। श्री लंका में जातीय संघर्ष, बांग्लादेश में सरकार के विरुद्ध उग्र प्रदर्शन, पाकिस्तान में सैन्य हस्तक्षेप,नेपाल में राजतन्त्र की वापसी के लिए संघर्ष, तथा भारत में विपक्ष तथा लोकतंत्रिक संस्थाओं का कमजोर होना इसके मुख्य कारण के रूप में देखा जाना चाहिए।

एक अन्यत्र संस्थान, गोथेनबर्ग स्थित वी-डेम इंस्टीट्यूट द्वारा गत 15 वर्षों से लोकतंत्र पर रिपोर्ट प्रकाशित की जा रही है। इस रिपोर्ट को विश्व में लोकतंत्र के अध्ययन के लिए उपयोगी माना जाता है।

तालिका 2.

वी-डेम रिपोर्ट 2025 के अनुसार गत 10 वर्षों (2014 से 2024) में दक्षिण एशियाई देशों का मूल्यांकन

देश	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	2024
अफगानिस्तान	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	पू/नि	पू/नि	पू/नि
बांग्लादेश	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि
भूटान	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	उ/लो	उ/लो	उ/लो	चु/लो
भारत	चु/लो	स्या/लो	स्या/लो	स्या/नि	स्या/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि
मालदीव	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो
नेपाल	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो
पाकिस्तान	स्या/लो	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि	चु/नि
श्री लंका	चु/नि	स्या/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	स्या/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो	चु/लो

स्रोत: डिमाक्रसी रिपोर्ट 2025, 25 वर्षों की निरंकुशता – क्या लोकतंत्र पराजित हो गया है? वी-डेम संस्थान के आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित। https://www.v-dem.net/publications/democracy-reports/

टिप्पण: उ/लो = उदार लोकतंत्र, चु/लो = चुनावी लोकतंत्र, स्या/लो = स्याह (ग्रे) लोकतंत्र, स्या/नि = स्याह (ग्रे) निरंकुशता,चु/लो = चुनावी निरंकुशता, पू/लो = पूर्ण निरंकुशता

वी-डेम इंस्टीट्यूट द्वारा जारी 'लोकतंत्र रिपोर्ट 2025' के अनुसार, भारत, जिसे 2018 में लोकतान्त्रिक गिरावट से 'चुनावी निरंकुश' किया गया था, अब कई मानदंडों पर और भी नीचे गिर गया है और 'सबसे खराब निरंकुश' देशों में से एक माना गया है। भारत को ऐसे राष्ट्रों के वर्ग में रखा गया है, जिन राष्ट्रों में 'मौलिक लोकतांत्रिक घटकों जैसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संघ बनाने की स्वतंत्रता और स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव का अभाव[3]' पाया जाता है। इस रिपोर्ट के अनुसार भूटान, नेपाल, मालदीव तथा श्री लंका के अतिरिक्त दक्षिण एशिया के राष्ट्रों में निरंकुश शासन का प्रभाव व्याप्त है।

लोकतंत्र के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ:

राजनीति का सैन्यीकरण: पाकिस्तान और बांग्लादेश में शासन में महत्वपूर्ण सैन्य हस्तक्षेप स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बांग्लादेश के छात्र आंदोलन को कई सामरिक विशेषज्ञों ने सेना द्वारा प्रायोजित आंदोलन के रूप में देखा गया। ब्रह्म चलानी अपने लेख 'बांग्लादेश में एक शांत सैन्य तख्तापलट' में स्पष्ट करते हुए लिखते हैं, "हकीकत में, दुनिया के आठवें सबसे अधिक आबादी वाले देश में शासन परिवर्तन एक नागरिक मुखौटे के पीछे एक शांत सैन्य तख्तापलट के समान है। सलाहकारों से बनी एक अंतरिम नागरिक सरकार स्थापित करके, तख्तापलट करने वाले नेताओं ने न केवल अमेरिकी नेतृत्व वाले प्रतिबंधों को रोका है, बल्कि देश में छात्र-नेतृत्व वाली 'क्रांति' के रोमांचित पश्चिमी मीडिया आख्यान को बढ़ावा देने में भी मदद की है।[4]" जिसके परिणामस्वरूप नागरिक शासन कमज़ोर बना हुआ है। इसके अतिरिक्त प्रमुख रूप से तीन बार (1975, 1981,1982) सैन्य शासन स्थापित हुआ है। पाकिस्तान में भी सेना, नागरिक सरकार के समांतर शक्ति के रूप में कार्य करती है तथा इतिहास में तीन बार (1958- जनरल अयूब खान, 1977- जनरल जिया-उल-हक, 1999- जनरल परवेज मुशर्रफ) सैन्य शासन स्थापित हो चुका है। मालदीव में सैन्य तख्तापलट के प्रयास 1988 में किया गया जिसे भारत की सैन्य सहायता से नाकाम किया गया। 2012 में राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद ने भी अपने इस्तीफे को तख्ता पलट का प्रयास बताया यद्यपि इसे अंतर्राष्ट्रीय पर्यवेक्षयकों ने सही नहीं पाया।

भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद: दक्षिण एशिया में, भ्रष्टाचार लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास को खत्म कर रहा है और असमानता को बढ़ावा मिल रहा है। इस क्षेत्र में विविध शासन प्रणालियाँ हैं, लेकिन भ्रष्टाचार और तरजीही व्यवहार को रोकने में दोनों की ही समान चुनौतियां हैं। इन मुद्दों का लोकतांत्रिक संस्थाओं, आर्थिक विकास और सार्वजनिक विश्वास पर दूरगामी प्रभाव पड़ रहा है। भ्रष्टाचार से निपटने के लिए विभिन्न उपाय किए

गए हैं जिनमें मुख्य रूप से भारत में आरटीआई और लोकपाल, मानव विवेक को कम करने के लिए सार्वजनिक सेवाओं का डिजिटलीकरण, व्हिसलब्लोअर सुरक्षा कानून (हालांकि अक्सर कमज़ोर या लागू नहीं होते), नागरिक समाज सक्रियता और खोजी पत्रकारिता आदि महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं। भाई-भतीजावाद पूरे क्षेत्र में व्यापकता से व्याप्त है, भारत में गाँधी परिवार, बांग्लादेश में शेख हसीना और खालिदा जिया, श्रीलंका में राजपक्षे, पाकिस्तान में भुट्टो आदि क्षेत्र में इसके उदाहरण कहे जा सकते हैं।

जातीय और धार्मिक तनाव: पहचान की राजनीति अक्सर समाजों को ध्रुवीकृत करती है, जैसा कि भारत, श्रीलंका और नेपाल में देखा गया है। वर्तमान में धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सम्पूर्ण क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण समस्या है। बांग्लादेश में हिन्दू धर्म के अल्पसंख्यकों पर हुए हमले, भारत में भीड़ द्वारा अल्पसंख्यकों की हत्या के मामलों में हाल के वर्षों में वृद्धि हुई। तमिल और सिंहली विवाद श्रीलंका में आज भी पहचान की राजनीति का एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। वहीं नेपाल में मधेसी और जनजातियों के मध्य संघर्ष कई बार उभर कर सामने आता रहा है मधेसी आंदोलन (2007-2015) पहचान के लिए बड़ा आंदोलन था जिसमें हुई हिंसा में 50 से अधिक लोग मारे गए।

मीडिया की स्वतंत्रता और नागरिक स्वतंत्रता: धार्मिक कट्टरता और अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव दक्षिण एशियाई देशों में नागरिक स्वतंत्रता पर गंभीर प्रभाव डाल रहे है। इसके साथ साथ सरकार की सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्मों पर बढ़ती निगरानी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित कर रही है। ऐम्निस्टी इंटरनेशनल की द स्टेट ऑफ द वर्ल्डस ह्यूमन राइट्स, अप्रैल 2025 की रिपोर्ट भारत के विषय में रेखांकित करती है कि भारत में 'राष्ट्रीय वित्तीय और जाँच एजेंसियों को नागरिक समाज, मानवाधिकार रक्षकों, कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और आलोचकों के खिलाफ हथियार बनाया जा रहा है, जिससे नागरिक स्वतंत्रता का स्थान सिकुड़ रहा है।[5] बांग्लादेश के हालिया घटनाक्रम के विषय में रिपोर्ट में कहा गया 'धार्मिक अल्पसंख्यकों और मूल निवासियों को हिंसा का सामना करना पड़ा। कपड़ों का कार्य करने वाले श्रमिकों को धमकी, उत्पीड़न और संगठन बनाने तथा शांतिपूर्ण ढंग से एकत्र होने के उनके अधिकारों के दमन का सामना करना पड़ रहा है'।[6] वहीं श्रीलंका में सरकार द्वारा पारित नए कानून के विषय में रिपोर्ट कहती है 'इसके द्वारा असहमति को दबाने के लिए, बिना पर्याप्त परामर्श के और अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानूनों व मानकों का उल्लंघन किया गया है। अल्पसंख्यकों, कार्यकर्ताओं और नागरिक समाज को धमकाया और परेशान किया जा रहा है'।[7]

दक्षिण एशिया में वैश्विक रुझानों के अनुरूप प्रेस की स्वतंत्रता कम हो रही है, पत्रकारों को उत्पीड़न, सेंसरशिप और हिंसा का सामना करना पड़ रहा है। रेपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स की 2025 की रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण एशिया में मीडिया स्वतंत्रता की स्थिति का मूल्यांकन करने पर स्पष्ट होता है की इसमें निरंतर गिरावट आई है। तालिका 3. देखें।

तालिका 3.

देश	2020	2021	2022	2023	2024	2025
अफगानिस्तान	122 (62.30)	122 (59.81)	156 (38.27)	152 (39.75)	178 (19.09)	175 (17.88)
बांग्लादेश	151 (50.63)	152 (50.29)	162 (36.63)	163 (35.31)	165 (27.64)	149 (33.71)
भूटान	67 (71.10)	65 (71.14)	33 (76.46)	90 (59.25)	147 (37.29)	152 (32.62)
भारत	142 (54.67)	142 (53.44)	150 (41.00)	161 (36.62)	159 (31.28)	151 (32.96)
मालदीव	79 (70.07)	72 (70.87)	87 (59.55)	100 (56.93)	106 (52.36)	104 (52.46)
नेपाल	112 (64.90)	106 (65.38)	76 (62.67)	95 (57.89)	74 (60.52)	90 (55.20)
पाकिस्तान	145 (54.48)	145 (53.14)	157 (37.99)	150 (39.95)	152 (33.90)	158 (29.62)
श्री लंका	127 (58.06)	127 (57.80)	146 (42.13)	135 (45.85)	150 (35.21)	139 (39.93)

स्रोत: विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक की 2020 से 2025 संस्करण के आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित। देखें https://rsf.org/en/index

चुनावी सूचिता एवं अखंडता: चुनावी धोखाधड़ी, हिंसा और हेरफेर के आरोपों को क्षेत्र में एक सामान्य घटना के रूप में देखा जाता रहा है, खासकर बांग्लादेश और पाकिस्तान में। बांग्लादेश में चुनावी प्रक्रीया पर उठे प्रश्न छात्र आंदोलन और अंत में शासन तंत्र की विफलता का कारण बने। विपक्षी दल का चुनाव में प्रतिभाग नहीं करना, उनके उठाए गए संशय तथा संकाओं का निरकण न होना चुनावी प्रक्रिया को अवांछित प्रक्रिया बनाता है। लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने में चुनाव की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जैसा की मानवाधिकर की सार्वभौमिक घोषणा, 1948 चुनाव की महत्ता पर बल देता है व स्पष्ट करता है कि "प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश की सरकार में प्रत्यक्ष रूप से या स्वतंत्र रूप से चुने गए प्रतिनिधियों के माध्यम से भाग लेने का अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश में

सार्वजनिक सेवा तक समान पहुँच का अधिकार है। जनता की इच्छा सरकार के अधिकार का आधार होगी; यह इच्छा आवधिक और वास्तविक चुनावों में व्यक्त की जाएगी जो सार्वभौमिक और समान मताधिकार द्वारा होंगे और गुप्त मतदान या समतुल्य स्वतंत्र मतदान प्रक्रियाओं द्वारा आयोजित किए जाएँगे"।[8] चुनावी प्रक्रिया की पवित्रता को लोकतंत्र का आधार स्तंभ कहा जा सकता है। गत कुछ वर्षों में भारत में भी चुनावी प्रक्रिया को लेकर गंभीर आरोप देखने को मिले हैं।

न्यायिक स्वतंत्रता: न्यायालयों में अक्सर स्वायत्तता की कमी देखी जाती रही है। उन्हें सत्तारूढ़ शासन द्वारा सहयोजित करने का प्रयास जाता है। न्यायपालिका को प्रभावित करने के विधायिका और कार्यपालिका के प्रयास निरंतर दक्षिण एशिया में बने रहते हैं। सामाजिक चेतना में भी न्यायपालिका की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण लोकतंत्रिक घटक नहीं है। पाकिस्तान में राजनीतिक और सैन्य शक्तियों द्वारा न्यायपालिका में अक्सर हस्तक्षेप किया जाता रहा है। पाकिस्तान के राजनीतिक परिदृश्य पर सैन्य प्रभुत्व के परिणामस्वरूप न्यायिक स्वतंत्रता में कमी आई है। भारत में न्यायपालिका, लोकतंत्र में कमोबेश स्थिर होने के बावजूद, वर्तमान में न्यायिक अतिक्रमण का आरोप लगा रही है और स्वयं भी नियुक्तियाँ काफ़ी हद तक अस्पष्ट हैं। पाकिस्तान में, न्यायपालिका राजनीतिक और सैन्य हस्तक्षेप का शिकार रही है, जिससे उसकी स्वतंत्रता और भी कमज़ोर हो गई है।[9]

क्षेत्र में लोकतंत्र के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सुझाव: लोकतंत्र आधुनिक समाजों में सर्वप्रिय शासन व्यवस्था बना हुआ है। इसके विभिन्न कारकों में से एक यह है की इसमें मानवीय विकास के सर्वाधिक अवसर उपलब्ध हैं। दक्षिण एशिया जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में जहां विश्व की एक बड़ी आबादी का निवास है लोकतंत्र का मजबूत होना अत्यावश्यक हो जाता है। उपरोक्त संदर्भ में यदि देखा जाए तो क्षेत्र के राष्ट्रों में लोकतंत्र में गिरावट स्पष्ट दिखाई देती है। इस क्षेत्र में लोकतंत्र के संरक्षण और संवर्धन हेतु इन सुझाओं को अमल में लाया जा सकता है।

1. लोकतंत्र की रक्षा और मजबूती के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि न्यायिक स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने को प्राथमिकता दी जाए ताकि संविधानोरूप शासन व्यवस्थाओं को मजबूत किया जा सके।
2. अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है। इस क्षेत्र का कृत्रिम विभाजन सभ्यता और संस्कृति के लिए मानवीय इतिहास की सबसे जटिल चुनौती रहा है। धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने पर क्षेत्र की प्रत्येक सरकार को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय स्तर पर दक्षेस/सार्क के माध्यम से सामूहिक चेतना का विस्तार करना एक कारगर प्रयास हो सकता है। एक अंतर-राष्ट्रीय आयोग क्षेत्रीय स्तर पर सार्क के माध्यम से निर्मित कर अल्पसंख्यक अधिकारों का संरक्षण व संवर्धन कर सकता है।
3. निष्पक्ष चुनावी प्रक्रिया सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। चुनाओं की निष्पक्षता सुनिश्चित करना तथा विपक्ष तथा असहमति की आवाजों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनुसचित करने की सामूहिक चेतना का विकास क्षेत्र में लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए आवश्यक है।
4. आर्थिक या सुरक्षा चिंताओं के साथ-साथ लोकतांत्रिक मानदंडों पर क्षेत्रीय सहयोग दीर्घकालिक स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस/सार्क) को मजबूत कर इस क्षेत्र में सहअस्तित्व तथा सहयोग की भावना के विकास को पोषित करना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष: यद्यपि हम लोकतंत्र के उपरोक्त आदर्श दृष्टिकोण को स्वीकार करते हैं तो यह कहा जा सकता है कि दक्षिण एशिया लोकतांत्रिक विकास अधूरा है और नागरिकों की स्वायत्तता का विस्तार करने की आवश्यकता है, यह कहना अनुचित न होगा कि उदार प्रतिनिधि लोकतंत्र सामाजिक-आर्थिक असमानता को समाप्त करने में अपनी विफलता के बावजूद एक सार्थक लक्ष्य है। भारत में, स्वतंत्रता के बाद से लोकतांत्रिक भागीदारी के विस्तृत दायरे ने राजनीति के चरित्र को बदला है क्योंकि पहले अधीनस्थ समूहों ने आवाज़ हासिल की है। पाकिस्तान ने प्रक्रियात्मक लोकतंत्र के दौर का अनुभव किया है, जिसमें राष्ट्रीय चुनाव हुए (1971-77, 1988-99, 2002, 2008, 2013 2018 और 2024) हैं। फिर भी लोकतांत्रिक एकीकरण पाकिस्तान में एक कल्पना ही बना हुआ है, और पाकिस्तानियों को कभी भी सरकार को सत्ता से बाहर करने के लिए वोट देने का अवसर नहीं मिला है।

दक्षिण एशिया में लोकतंत्र वर्तमान में प्रतिगमन की व्यापक वैश्विक प्रवृत्ति से साम्य प्रदर्शित करता है। लोकलुभावनवाद, बहुसंख्यकवाद और कार्यपालिका का अतिक्रमण लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की नींव को कुंठित कर रहे हैं। यद्यपि, नागरिक समाजों, युवा आंदोलनों और स्वतंत्र मीडिया के सहारे लोकतंत्र के लिए संघर्षरत हैं।

वैश्विक अनिश्चितता के समय में, दक्षिण एशिया में लोकतंत्र का भविष्य न केवल नेताओं और संस्थानों पर निर्भर करता है, बल्कि लोगों की बोलने, संगठित होने और जवाबदेही की मांग करने की इच्छा पर भी निर्भर करता है। यह महत्वपूर्ण होगा की राज्य के नागरिकों की चेतना में लोकतंत्र के लिए कैसा स्थान है। इसके विकास राज्य के साथ-साथ क्षेत्र की सामूहिक चेतना का महत्वपूर्ण स्थान है।

क्षेत्रीय सहयोग का संवर्धन इस दिशा में एक अतिआवश्यक घटक है जिसे मजबूत करने के प्रयासों में कमी से क्षेत्र अस्थिर बना हुआ है तथा अनिश्चितताओ से घिरा हुआ है। साथ ही वाह्य शक्ति जैसे कि चीन तथा अमेरिका के हितों के अनुकूल बना हुआ है।

संदर्भ:

1. लिंज़, जुआन जे., और अल्फ्रेड स्टेपन। प्रॉबलम ऑफ डेमोक्रेटिक ट्रैनजिशन ऍंड कोन्सोलिडेशन*:* साउथर्न यूरोप, साउथ अमेरिका, एंड पोस्ट-कम्यूनिस्ट यूरोप। जोन्स होपकिंस यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996।
2. देखें ईमैजिनिंग डेमोक्रेटिक फ्यूचर : साउथ एशिया फोरसाइट रिपोर्ट 2025, अध्याय 4 पृष्ठ संख्या-16-19। https://doi.org/10.31752/idea.2025.1
3. देखें डिमोक्रेसी रिपोर्ट 2025, *25* इयर्स ऑफ औटोक्रेटाइजेसन – डेमॉक्रसि ट्रम्पेड?, वी-डैम संस्थान, गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय, पृष्ठ संख्या 13।
4. देखें ब्रह्म चेलानी, 'बांग्लादेश में एक शांत सैन्य तख्तापलट', द हिल, 17/08/2024। https://thehill.com/opinion/international/4831210-a-quiet-military-coup-in-bangladesh/
5. ऐम्निस्टी इंटरनेशनल, द स्टेट ऑफ द वर्ल्डस ह्यूमन राइट्स, अप्रैल 2025, पृष्ठ संख्या 193।
6. ऐम्निस्टी इंटरनेशनल, द स्टेट ऑफ द वर्ल्डस ह्यूमन राइट्स, अप्रैल 2025, पृष्ठ संख्या 90।
7. ऐम्निस्टी इंटरनेशनल, द स्टेट ऑफ द वर्ल्डस ह्यूमन राइट्स, अप्रैल 2025, पृष्ठ संख्या 343।
8. देखें मानवाधिकर की सार्वभौमिक घोषणा, 1948, अनुच्छेद 21।
9. खान, आमिर, नसीम, डॉ. इमरान, इनमुल्लाह डॉ. मुहम्मद; 'कान्स्टिटूशनल डाइनैमिक्स एण्ड जूडिशल अटानमी इन साउथ एशिया: ए कम्पैरटिव स्टडी ऑफ पाकिस्तान एण्ड इट्स नेबर्स'; अल-मनहल रिसर्च जर्नल; वॉल-5 इशू 1, जनवरी-मार्च 2025

अन्य संदर्भ*:*

1. रिजवी, गोवहेर; 'डिमाक्रसी, गवर्नन्स एण्ड सिवल सोसाइटी इन साउथ एशिया'; द पाकिस्तान डेवलपमेंट रिव्यू 33:4 Part 1 (विन्टर, 1994) पृष्ठ 593-624
2. एडेनी, कैथरीन और एंड्रयू व्याट; 'डेमॉक्रसि इन साउथ एशिया: गेटिंग बियोंड द स्ट्रक्चर-एजेन्सीस डाइकॉटमी'; पॉलिटिकल स्ट्रडीज़; वॉल-52 (2004): पृष्ठ 1-18.
3. बैक्सटर क्रेग; 'डिमाक्रसी एण्ड अथॉरटेरीअनिज़म इन साउथ एशिया'; जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स'; विन्टर 1985 वॉल 38 संख्या 2 पृष्ठ 307-319
4. थापा, संत बहादुर; 'द बांग्लादेश क्राइसिस: ए वैक-अप कॉल फॉर साउथ एशिया'; अमेरिकन जर्नल ऑफ पोलिटिकल साइंस एण्ड लॉ क्रिमिनालजी; जनवरी 2025*;* DOI: 10.37547/tajpslc/Volume07 Issue01-02
5. इस्लाम, मो. नज़रुल; इस्लाम मो. सदुल; 'इस्लाम एण्ड डिमाक्रसी इन साउथ एशिया'; पालग्रावे मैकमिलन; 2020 ISBN 978-3-030-42908-9 DOI: 10.1007/978-3-030-42909-6
6. रुडोल्फ, लॉय्ड; 'न्यू डिमेन्शनस इन इंडियन डिमाक्रसी'; जर्नल ऑफ डिमाक्रसी; जनवरी 2002
7. बंदोपाध्याय, सौम्या, टोररे आंद्रे, कसाका, पाउलो, डेंटिनहो, टॉमज़; 'रीजनल क्वॉपरैशन इन साउथ एशिया: सोसिओ-इकनॉमिक, स्पैशल इकोलॉजिकल एण्ड इंस्टिट्यूसनल आस्पेक्टस'; स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग; 2017 ISBN 978-3-319-56747-1 DOI 10.1007/978-3-319-56747-1
8. जलाल, आयेश; डिमाक्रसी एण्ड अथॉरटेरीअनिज़म इन साउथ एशिया: ए कम्पैरटिव एण्ड हिस्टॉरिकल पर्स्पेक्टिव'; कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 1995 ISBN O 521 47862 6;